1/06/2020

Subject - Pedagogy of Commerce
Topic - Laboratory Method

B.Ed
Ist Year

प्रयोगशाला पद्धति

इस विधि का प्रमुख उद्देश्य बालकों का व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक विकास करना है - शिक्षा को अधिक से अधिक रोचक बनाना, सहायक सामग्रियों के बढ़ते हुए प्रयोग ने वाणिज्य शिक्षण हेतु 'वाणिज्य प्रयोगशाला' के विचार को जन्म दिया।

वैज्ञानिक विषयों का ज्ञान, जिस प्रकार छात्र विभिन्न उपकरणों तथा साज-सज्जा द्वारा विभिन्न कार्य करके सीखता है, उसी प्रकार वाणिज्य का ज्ञान भी 'करके सीखा' जा सकता है। इस प्रकार वर्तमान युग में प्रयोगशाला के माध्यम से शिक्षण कार्य करना केवल वैज्ञानिक विषयों तक ही सीमित नहीं रहा है।

प्रयोगशाला पद्धति के अनुसार शिक्षण कार्य करते समय कक्षा के समस्त छात्रों को या तो कार्य दे दिया जाता है या वे स्वयं ही कुछ कार्य कर लेते हैं। वाणिज्य की प्रयोगशाला में छात्र एक ही समय में विभिन्न कार्य सम्पादित करते हुए दिखलाई पड़ते हैं। कोई रजिस्टर का अध्ययन कर रहा है, कोई निष्कर्ष निकाल रहा है, इस प्रकार वाणिज्यशास्त्र की प्रयोगशाला में एक ही समय में विभिन्न छात्र अनेक कार्य करते हैं।

डाल्टन - योजना के अतिरिक्त, इनमें प्रयोगशाला में एक समय कार्य करने का कालांश सामान्यतः साठ मिनट का होता है और प्रति सप्ताह प्रायः पाँच कालांश होते हैं। आवश्यकता पड़ने पर इस पद्धति के अन्तर्गत वाद - विवाद पद्धति, समस्या पद्धति, तथा भाषण पद्धति का भी प्रयोग कर लिया जाता है।

Scanned with CamScanner

प्रयोगशाला पद्धति के गुण :-

(1) प्रयोगशाला में छात्र अनेक क्रियाएं करते हैं। इसके अन्तर्गत छात्र सक्रिय होकर क्रिया करते हैं।

(2) इस पद्धति में छात्रों की रुचि तथा सुविधा का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है, वे अपनी रुचि के अनुसार निर्धारित कार्य करने के लिए अपनी स्वयं की योजना बनाते हैं।

(3) यह पद्धति छात्रों में दायित्व वहन करने की क्षमता का विकास करती है, जो कार्य छात्रों को दिया जाता है उसे वे स्वयं पूरा करने का प्रयत्न करते हैं।

(4) प्रयोगशाला पद्धति सामूहिक शिक्षण के दोषों को दूर कर शिक्षा को सरल, सुगम एवं बोधगम्य बनाती है।

(5) प्रयोगशाला पद्धति के अन्तर्गत छात्र पुस्तक, पुस्तकालय तथा अन्य शिक्षा-उपकरणों का प्रयोग करना सीख जाते हैं।

प्रयोगशाला पद्धति के दोष :-

(1) प्रयोगशाला पद्धति के माध्यम से अध्ययन करने हेतु अधिक समय की आवश्यकता पड़ती है।

(2) इसके लिए अत्यन्त कुशल व दक्ष अध्यापक की आवश्यकता होती है।

(3) यह पद्धति काफी यन्त्रवत है। छात्र प्रयोगशाला में रहकर यन्त्रवत कार्य करते हैं।

(4) इसकी सफलता अध्यापक के निर्देशन पर निर्भर है। निर्देशन सफल न रहा तो सम्पूर्ण पद्धति अपना उद्देश्य खो देती है।

(5) यह पद्धति अत्यधिक खर्चीली है। प्रत्येक विषय हेतु प्रयोगशाला सम्भव नहीं है।

(6) इस पद्धति में ज्ञान के अव्यवस्थित हो जाने का भय रहता है।

Complete

Scanned with CamScanner